श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम।
वर्ग – बी० ए० पार्ट – I 'प्रतिष्ठा'
पत्र – प्रथम, यूनिट न० – 12
राजनीतिक सिद्धान्त – डॉ० पुखराज जैन
दिनांक – 21-07-2020

प्रश्न :– बहुलवाद की परिभाषा दीजिए और सम्प्रभुता सम्बन्धी विचारों पर बहुलवादियों का आक्षेप स्पष्ट करें।

उत्तर :– विभिन्न विचारकों द्वारा सम्प्रभुता की अद्वैतवादिता का प्रतिपादन किया गया है, जिसका अर्थ होता है राज्य में एक ही सम्प्रभुता होती है। जिसके अन्तर्गत सभी लोग अधीन हैं। सम्प्रभुता की अद्वैतवादिता की इस धारणा के विरुद्ध जिस विचारधारा का उदय हुआ, उसे हम बहुलवाद कहते हैं। जहाँ सम्प्रभुता के परम्परावादी विचारकों ने स्वेच्छाचारी, असीम, तथा अविभाज्य माना है, वहाँ बहुलवादी राज्य को सिर्फ संघों का रूप मानते हैं और सम्प्रभुता को राज्य तथा संघों में विभक्त।

समाज में विद्यमान अन्य अनेक समुदायों का अस्तित्व राज्य सत्ता को सीमित कर देता। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल राज्य की ही सहायता स्वीकार नहीं करता, बल्कि राज्य के साथ दूसरा अनेक समुदायों और संघों की सहायता भी स्वीकार करता है। बहुलवादी विचारकों ने इसे निम्न प्रकार से अपना अलग-अलग मत प्रकट किये हैं जो इस प्रकार है—

लिण्डसे :– "यदि हम तथ्यों का अवलोकन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्प्रभुता के सिद्धान्त का अन्त हो चुका।"

आर्कर :— " कोई भी राजनीतिक सिद्धान्त इतना निष्फल नहीं हुआ है जितना कि प्रभुत्वसम्पन्न राज्य का सिद्धान्त निष्फल हो चुका है।"

लास्की :— समाज के ढाँचे को पूर्ण होने के लिए उसे संघात्मक होना चाहिए।

बहुलवादी नहीं मानते कि राज्य अपनी शक्ति के कारण कुछ सर्वोच्च अधिकार रख सकता है। वे उन सभी समुदायों के समान, अधिकारों में विश्वास करते हैं, जो अपने सदस्यों को एक सूत्र में पिरोकर उनके लिए महान कार्य करते हैं। सम्प्रभुता न केवल राज्य की धरोहर है अपितु सभी समुदाय उसका उपभोग करते हैं। अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बहुलवाद सम्प्रभुता की अद्वैतवादी धारणा के विरुद्ध एक ऐसी प्रतिक्रिया कहा जा सकता है जो कि " राज्य के अस्तित्व को बनाए रखना चाहती है किन्तु राज्य की सम्प्रभुता का अन्त करना श्रेयस्कर मानती है।"

बहुलवादी विचारकों ने कई सैद्धान्तिक रूपों से सम्प्रभुता के अद्वैतवादी सिद्धान्त पर प्रहार किया है। उन्होंने सम्प्रभुता के इस परम्परागत सिद्धान्त को हानिकारक, निरर्थक तथा अनुचित बतलाया है। क्रमशः..........

Scanned with CamScanner